International Journal of Enhanced Research in Educational Development (IJERED)
ISSN: 2320-8708, Vol. 6 Issue 3, May-June, 2018, Impact Factor: 3.275

हिंदी शोध के प्रयोजनमूलक तथा तकनीकी क्षेत्र: प्रविधि तथा स्तरीकरण के लिए सुझाव

पुष्पा बाई

Email id: pushpayadav052@gmail.com

सार

प्रयोजनमूलक हिन्दी के संदर्भ में 'प्रयोजन' शब्द के साथ 'मूलक' उपसर्ग लगने से प्रयोजनमूलक पद बना है। प्रयोजन से तात्पर्य है उद्देश्य अथवा प्रयुक्ति। 'मूलक' से तात्पर्य है आधारित। अत: प्रयोजनमूलक भाषा से तात्पर्य हुआ किसी विशिष्ट उद्देश्य के अनुसार प्रयुक्त भाषा। इस तरह प्रयोजनमूलक हिन्दी से तात्पर्य हिन्दी का वह प्रयुक्तिपरक विशिष्ट रूप या शैली है जो विषयगत तथा संदर्भगत प्रयोजन के लिए विशिष्ट भाषिक संरचना द्वारा प्रयुक्त की जाती है। विकास के प्रारम्भिक चरण में भाषा सामाजिक सम्पर्क का कार्य करती है। भाषा के इस रूप को संपर्क भाषा कहते हैं। संपर्क भाषा बहते नीर के समान है। प्रौढा की अवस्था में भाषा के वैचारिक संदर्भ परिपुष्ट होते हैं और भावात्मक अभिव्यक्ति कलात्मक हो जाती है। भाषा के इन रूपों को दो नामों से अभिहित किया जाता है। प्रयोजनमूलक और आनन्दमूलक। आनन्द विधायक भाषा साहित्यिक भाषा है। साहित्येतर मानक भाषा को ही प्रयोजनमूलक भाषा कहते हैं।

Keywords: अनुसन्धान, अन्वेषण, मीमांसा, अनुशीलन, परिशीलन, रिसर्च आदि।

प्रस्तावना

हिन्दी तथा अन्य आधुनिक भारतीय भाषाओं को प्रशासन, शिक्षा तथा परीक्षा का माध्यम बनाने का सपना तथा संकल्प स्वंतत्रता प्राप्ति के बाद भारत के संविधान निर्माताओं ने बहुत सूझ-बूझ तथा विधार मथन के पश्चात् भारत की जनता के सम्मुख रखा। यह संकल्प, यह सपना भारत की सांस्कृतिक तथा भाषायी विविधता को ध्यान में रखकर लिया गया एक आदर्श ऐतिहासिक फैसला था। यह एक ऐसा संकल्प था, जो भारत की मिट्टी में जन्मी प्रज्ञा को ज्ञान-विज्ञान के क्षेत्र में मौलिकता प्रदान करने तथा भारतीयता को सुरक्षित रखने के लिए लिया गया था। यह राष्ट्रीय एकता तथा सामाजिक विकास के लिए

आवश्यक था तथा एक ऐसा भविष्यगामी फैसला था जिसमें 'सर्वेभवन्तु सुखिनः' की भावना निहित थी। आधुनिक समय में शिक्षा का उद्देश्य अलग है, जबकि भारतवर्ष में पहले शिक्षा का उद्देश्य अलग था| हमारे यहाँ शिक्षा का उद्देश्य ज्ञान-प्राप्ति और व्यक्तित्व का विकास था| आज शिक्षा का मतलब रोजगार से है| वही शिक्षा अच्छी है, जो रोजगार दिला सके| इस दृष्टि से देखें तो विश्वविद्यालयों में हिंदी समेत अन्य आधुनिक भारतीय भाषाओं के जो विभाग हैं, उनमे पढ़ने वाले छात्रों के सामने रोजगार के अवसर कम हैं| पहले भौतिकी, रसायन, गणित आदि शास्त्रीय विषयों को रोजगार दिलाने की दृष्टि से महत्वपूर्ण माना जाता था| इसलिए इन विषयों का और इन विषयों को पढ़ने-पढ़ाने वाले छात्रों-अध्यापकों का विश्वविद्यालयों और समाज में दबदबा था| उस समय भी मेडिकल और इंजीनियरिंग के क्षेत्र ज्यादा रोजगार-परक थे| इसलिए ये भौतिकी, रसायन, और गणित जैसे विषयों से भी आगे थे| आज बिजनेस मैनेजमेंट और सूचना-प्रद्यौगिकी जैसे विषयों ने इन्हें भी पीछे छोड़ दिया है| शिक्षण संस्थानों में सबसे अधिक भीड़ अब इन्हीं विषयों में होती है| जो विषय जितने अधिक पैकेज के साथ जल्दी रोजगार देता है, वह विषय समाज और शैक्षणिक जगत में उतनी ही अधिक प्रतिष्ठा पाता है| अनुशासन के रूप में मान्य विषयों का अगर श्रेणीक्रम बनायें तो हिंदी तथा अन्य आधुनिक भारतीय भाषाओँ के विभाग सबसे निचले पायदान के अनुशासन होंगे| इसका कारण यह है कि रोजगार दिलाने की दृष्टि से इन विषयों का क्षेत्र बहुत विस्तृत रूप में उद्घाटित नहीं हुआ है| हिंदी जैसे विषय पढ़ने वाले छात्रों के सामने एकमात्र रोजगार अध्यापन है| कुछ लोग पत्रकारिता में भी चले जाते हैं| हिंदी और दूसरी भाषाओँ में उच्च शिक्षा प्राप्त करने वाले छात्र एकाध अपवादों को छोड़ दें तो किसी बड़ी प्रतियोगी परीक्षा के जरिये कोई बड़ी हैसियत वाली नौकरी प्राप्त करते नहीं देखे जाते| हिंदी पढ़कर यदि कोई बड़ी नौकरी में नहीं जा सकता और समाज में बड़ी हैसियत नहीं पा सकता तो स्वाभाविक रूप से समाज में उसकी हैसियत कम होगी और उन विषयों को पढ़ने वालों की भी कोई सामाजिक हैसियत नहीं होगी| यही कारण है कि हिंदी समेत दूसरी भारतीय भाषाओँ के विभागों में वही छात्र पढ़ने आते हैं, जिनका नामांकन दूसरे विषयों में नहीं होता| एक तरह से हिंदी पढ़ने वाले छात्र, कुछेक अपवादों को छोड़कर, प्रायः पिछड़ी सामाजिक, आर्थिक और अकादमिक स्थिति के होते हैं | ऐसे छात्र प्रायः हीनताग्रंथी के शिकार होते हैं | वे विश्वविद्यालय में अपने को मिसफिट पाते हैं| ऐसे ही छात्रों में से कुछ लोग हिंदी विभागों के अध्यापक बनते हैं| ऐसे छात्र-अध्यापकों के भरोसे हिंदी शोध की जो दशा और दिशा है, वह सबके सामने है| आज हिंदी में शोध कार्य संपन्न करके पीएच.डी. उपाधि धारण करने वाले नौजवानों की बड़ी संख्या है| ये बेरोजगार डॉक्टरेट हैं| इनकी डिग्री की समाज में कोई पूछ नहीं | इनके शोध कार्य की कोई उपयोगिता भी समाज में नहीं है| इन्ही में से कुछ सौभाग्यशाली जैसे-तैसे अध्यापकी पा जाते हैं और वे इस दिशाहीन शोध कार्य के धंधे को आगे बढ़ाने लगते हैं |

प्रयोजनमूलक हिंदी से तात्पर्य है हिंदी का वह रूप जिसका हम अपने दैनिक जीवन के निर्वाह के लिए उपयोग करते हैं। हमारे दैनिक जीवन में प्रशासनिक एवं पत्रकारिता के क्षेत्र में व्यवहार होनेवाले भाषा रूप को हम प्रयोजनमूलक हिंदी कहते हैं। हम अपने दैनिक जीवन में अपने सगे संबंधियों या मित्रों को पत्र

लिखते हैं यो ई-मेल के द्वारा समाचार भेजते हैं। ई मेयल आदि द्वारा संपर्क करते वक्त जिस भाषा का प्रयोग किया जाता है उसे प्रयोजनमूलक हिंदी कहते हैं। व्यक्तिगत या संस्थागत पत्राचार या ईमेयल की भाषा के हम प्रयेजनमूलक हिंदी कहते हैं, क्योंकि उस में भाषा के निश्चित रूपों का हम प्रयोग करते हैं। संचार के माध्यमों, कार्यालयों एवं विभिन्न अनुसंधान संस्थानों में व्यवहार किए जानेवाले हिंदी भाषा के रूप को हम प्रयोजनमूलक हिंदी कहते हैं, क्योंकि इन में भाषा के निश्चित रूपों का व्यवहार किया जाता है। प्रत्येक क्षेत्र के व्यवहार की भाषा के रूप में निश्चित होते हैं, जिनका प्रयोग निश्चित व्यवहार क्षेत्र में किया जाता है।

हिंदी भाषा व्यवहार क्षेत्र में इतना अधिक प्रसार पा चुकी है कि आज हिंदी के प्रयोग की विभिन्न प्रयुक्तियों का प्रचलन बढ रहा है । हिंदी भाषा की प्रयोग होनेवाली विभिन्न प्रयुक्तियों को ही हम प्रयोजनमूलक हिंदी के नाम से जानते हैं। प्रयोजनमूलक भाषा का वह रुप है जिसका प्रयोग किसी प्रयोजन विशेष अथवा कार्य विशेष के संदर्भ में होता है। भाषा विचार - संप्रषण का माध्यम है और विचार संप्रषण का संबंध किसी-न-किसी कार्य विशेष से अवश्य होता है। प्रयोग के आधार पर भाषा के दो रुप माने जा सकते हैं एक वह रुप जिसका प्रयोग सामान्य जन-जीवन में दैनिक कार्यों के संदर्भ में होता है और जिसका अभ्यास या ज्ञान कोई व्यक्ति सामान्य जीवन के परिवेश से ही प्राप्त कर लेता है। इस रूप को सामान्य हिंदी कहते हैं। दूसरा रूप वह है जिसका प्रयोग सामान्य जीवन के संदर्भों से भिन्न किन्हीं विशेष कार्यों के संदर्भों में होता है और जिसका अभ्यास या ज्ञान विशेष प्रयत्न से प्राप्त किया जा सकता है। इस रुप को प्रयोजनमूलक भाषा कहते हैं।

राजभाषा के अतिरिक्त अन्य नये-नये व्यवहार क्षेत्रों में हिन्दी का प्रचार तथा प्रसार होता है, जैसे रेलवे प्लेटफार्म, मंदिर, धार्मिक संस्थानों आदि में। जीवन के कई प्रतिष्ठित क्षेत्रों में भी अंग्रेजी के स्थान पर हिन्दी का प्रयोग किया जाता है। विज्ञान और तकनीकी शिक्षा, कानून और न्यायालय, उच्चस्तरीय वाणिज्य और व्यापार आदि सभी क्षेत्रों में हिन्दी का व्यापक प्रयोग होता है। व्यापारियों और व्यावसायियो के लिए भी हिन्दी का प्रयोग सुविधाजनक और आवश्यक बन गया है। भारतीय व्यापारी आज हिन्दी की उपेक्षा नहीं कर सकते, उनके कर्मचारी, ग्राहक सभी हिन्दी बोलते हैं। व्यवहार के अलग-अलग क्षेत्रों में अलग-अलग प्रयोजनों से हिन्दी का प्रयोग किया जाता है। बैंक मे हिन्दी के प्रयोग का प्रयोजन अलग है तो सरकारी कार्यालयो में हिन्दी के प्रयोग का प्रयोजन अलग है। हिन्दी के इस स्वरूप को ही प्रयोजनमूलक हिन्दी कहते हैं। प्रयोजनमूलक रूप के कारण हिन्दी भाषा जीवित रही। आज तक साहित्यिक हिन्दी का ही अध्ययन किया जाता था, लेकिन साहित्यिक भाषा किसी भी भाषा को स्थित्यात्मक बनाती है और प्रयोजनमूलक भाषा उसको गत्यात्मक बनाती है। गतिमान जीवन में गत्यात्मक भाषा ही जीवित रहती है। प्रचलित रहती है। आज साहित्य तो संस्कृत में भी है, लेकिन उसका गत्यात्मक रूप-प्रयोजनमूलक रूप समाप्त हो गया है, अत: वह मृतवत हो गयी है।

शोध के उद्देश्य

शोध-संकल्पना तैयार कर लेने के बाद हर शोधार्थी अपने अनुभवजन्य संकल्पना की जाँच हेतु एक शोध-प्रारूप बनाता है। यह क्रिया उस स्थापत्य अभियन्ता के उद्यम जैसा होता है जो भवन-निर्माण से पूर्व तत्सम्बन्धी सारी व्यवस्था करता है। मकान का उद्देश्य, स्वरूप-संकल्पना, संरचना, सामग्री के स्रोत, संसाधन, अनुमानित व्यय, पूर्व-पश्चात की जनप्रतिक्रियाएँ। सारी बातों का अनुमानित निर्णय वह पूर्व में ही कर लेता है, अर्थात् अपनी योजना का एक आदर्श आधार वह तैयार कर लेता है। अपने शोध के सन्दर्भ में शोधार्थी भी इसी तरह अपनी योजना का एक आदर्श आधार तैयार कर लेता है, संकलित तथ्यों के विश्लेषण-विवेचन से उसके बारे में सारा निर्णय कर लेता है। शोध-प्रारूप वस्तुतः शोध के प्रारम्भ से अन्त तक की अभिकलित कार्य-योजना है, जिसमें शोधार्थी की पूरी कार्य-पद्धति दर्ज रहती है। आत्मस्फुरण से, अभिज्ञान से अथवा पर्यवेक्षक एवं सन्दर्भों के सहयोग से, जैसे भी हो, शोध-प्रारूप के रूप में शोधार्थी वस्तुतः अपने लिए एक स्वनिर्मित विधान पंजीकृत कराता है, जिसका अनुशरण करते हुए वह अपने लक्षित उद्देश्य तक पहुँच जाने की अश्वस्ति पाता है। प्रारूप बनाते समय शोधार्थी अपने अध्ययन के सामाजिक एवं आर्थिक सन्दर्भ का भी खास खयाल रखता है। शोध-प्रारूप से ही विषय की तार्किक समस्या का संकेत मिलता है। सचाई यह भी है कि शोध-प्रारूप कोई अलादीन का चिराग नहीं है। तमाम गुणवत्ताओं के साथ ऐसा भी नहीं मान लेना चाहिए कि शोध-प्रारूप कोई व्यास रचित जयकाव्य है, जो कहीं है, वह यहाँ है, जो यहाँ नहीं है वह कहीं नहीं है। ऐसा शोध-प्रारूप में नहीं होता। शोध-प्रारूप असल अर्थ में आत्मसंयम की एक कुँजी है, कभी-कभी कोई-कोई ताला इस कुँजी से नहीं भी खुल सकता है। इसीलिए इसे प्रारूप कहा जाता है। प्राप्त बोध, अनुभव, एवं सन्दर्भ के सहारे बनाई गई यह कार्य-योजना पूरे शोध के लिए पर्याप्त हो ही, यह आवश्यक भी नहीं है; देश-काल-पात्र के अनुसार, कार्य-प्रगति के दौरान कभी-कभी लक्षित उद्देश्य की प्राप्ति हेतु उस निर्धारित प्रारूप से इतर भी जाना पड़ जा सकता है; ऐसी स्थिति में किसी शोधार्थी को किसी धर्मसंकट में नहीं पड़ना चाहिए। शोध-प्रारूप शोध-कार्य सम्पन्न करने का साधन है, साध्य नहीं; आचरण है, धर्म नहीं। शोध-सामग्री एकत्र करने के क्रम में ऐसी असंख्य उलझनें उपस्थित हो जा सकती हैं, जिसका तनिक भी भान प्रारम्भ में नहीं हो पाता। इसलिए शोध की रूपरेखा तैयार कर लेने के बाद किसी शोधार्थी को उतना बेफिक्र भी नहीं हो जाना चाहिए। तथ्य-संग्रह के मार्ग में उत्पन्न होने वाली सभी समस्याओं का संकेत प्रारम्भ में नहीं भी मिल सकता है। शोध की समस्याओं में विविधता अधिक है इसलिए इसके प्रमुख चार उद्देश्य होते हैं :

a) **सैद्धान्तिक उद्देश्य** :- शिक्षा अनुसंधान में वैज्ञानिक शोध कार्यों द्वारा नये सिद्धान्तों तथा नये नियमों का प्रतिपादन किया जाता है। इस प्रकार के शोध-कार्य व्याख्यात्मक होते है। इनके अन्तर्गत चरों के सह-सम्बन्धों की व्याख्या की जाती है। इस प्रकार के शोध कार्यों से प्राथमिक रूप से नवीन ज्ञान की वृद्धि की जाती है।, जिनका उपयोग शिक्षा की प्रक्रिया को प्रभावशाली बनाने में किया जाता है।

b) **तथ्यात्मक उद्देश्य** :- शिक्षा के अन्तर्गत ऐतिहासिक शोध-कार्यों द्वारा नये तथ्यों की खोज की जाती हैं इनके आधार पर वर्तमान को समझने में सहायता मिलती है। इन उद्देश्यों की प्रकशित वर्णनात्मक होती है, क्योंकि तथ्यों की खोज करके, उसका अथवा घटनाओं का वर्णन किया जाता है। नवीन तथ्यों की खोज शिक्षा-प्रक्रिया के विकास तथा सुधार में सहायक होती है।

c) **सत्यात्मक उद्देश्य** :- दार्शनिक 'शोध' कार्यों द्वारा नवीन सत्यों का प्रतिस्थापन किया जाता है। इनकी प्राप्ति अन्तिम प्रश्नों के उत्तरों से की जाती है। दार्शनिक शोध-कार्यों द्वारा शिक्षा के उद्दश्यों, सिद्धान्तों तथा शिक्षण विधियों तथा पाठ्यक्रम की रचना की जाती है। शिक्षा प्रक्रिया के अनुभवों का चिन्तन बौद्धिक स्तर पर किया जाता है जिससे नवीन सत्यों तथा मूल्यों का प्रतिस्थापन किया जाता है।

d) **व्यावहारिक उद्देश्य** :- शिक्षा अनुसंधान के निष्कर्षों का व्यावहारिक प्रयागे होना चाहिये, परन्तु कुछ शोध-कार्यों मे केवल उपयोगिता को ही महत्व दिया जाता है, ज्ञान के क्षेत्र से योगदान नही होता है। इन्हे विकासात्मक अनुसंधान भी कहते है। क्रियात्मक अनुसंधान से शिक्षा की प्रक्रिया में सुधार तथा विकास किया जाता है अर्थात् इनका उद्देश्य व्यावहारिक होता है। स्थानीय समस्या के समाधान से भी इस उद्देश्य की प्राप्ति की जाती है।

वैज्ञानिक एवं तकनीकी हिंदी

वैज्ञानिक एवं तकनीकी हिंदी में विज्ञान एवं तकनीकी की विविध विधाओं में प्रयुक्त होनेवाले हिंदी का अध्ययन किया जाता है। इस के अंतर्गत चिकित्सा, इंजनीयरिंग, संगणक, बढईगिरी, लुहार का कार्य तथा प्रेस, मिल आदि से संबंधित विभिन्न क्षेत्रों में प्रयोग होनेवाली तकनीकी भाषा आती है। वैज्ञानिक एवं तकनीकी संप्रेषण में एक विशिष्ट भाषा का व्यवहार किया जाता है जिसके लिए विशेष ज्ञान की अपेक्षा होती है। तकनीकी संप्रेषण के विभिन्न क्षेत्र होते हैं, जो मानव जीवन से अभिन्न रूप से जुडे होते हैं। तकनीकी संप्रेषण का महत्वपूर्ण क्षेत्र वैज्ञानिक और प्रौद्योगिकी का क्षेत्र है। वैज्ञानिक क्षेत्र में होनेवाले नितनवीन अनुसंधानों के परिणामस्वरूप आज मानव जीनव में विज्ञान और प्रौद्योगिकी की भूमिका तीव्र गति से बढ रही है। ऐसे में मानव के सामान्य दैनिक जीवन के निर्वाह में भी विश्व के किसी कोने में होनेवाले अनुसंधान से परिचित होना अनिवार्य सा हो गया है। वैज्ञानिक एवं प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में होनेवाले नित नवीन अनुसंधान से परिचित होने का एक मात्र तरीका उस वैज्ञानिक एवं प्रौद्योगिकी साहित्य को हिंदी में भी लाना अनिवार्य है। परंतु वैज्ञानिक एवं तकनीकी विषय की अभिव्यक्ति के लिए जिस भाषा को प्रयोग करते हैं वही प्रयोजनमूलक वैज्ञानिक एवं तकनीकी भाषा है। वैज्ञानिक और औद्योगिकी का विकास पिछले कुछ वर्षों से पूरे विश्व में काफी तेजी से हुआ है।

यह सर्वविदित बात है कि वैज्ञानिक एवं तकनीकी की उपलब्दियाँ किसी भी उन्नत राष्ट्र का मेरुदंड होती है। जब तक हमारे वैज्ञानिक एवं विभिन्न तकनीकी की जानकारी इस के प्रयोक्तओं, बृहद मानव समुदाय एवं देशवासियों को नहीं होगी तो इस प्रकार का प्रयोगशालाओं तक परिसीमित ज्ञान अपना दीर्घकालीन व भहुआयामी प्रभाव छोडने में सक्षम नहीं हो सकता। अतः आवश्यक है कि विश्व के उन्नत देशों के समानंतर चलने के लिए हम ज्ञान विज्ञान एवं तकनीकी के क्षेत्र में अत्यंत महत्वपूर्ण विषयों को अपनी भारतीय भाषाओं, विशेषकर हिंदी के माध्यम से भी अभिव्यक्त कर प्रबुध्दजनों के साथ-साथ देश के जन-सामान्य तक पहुँचने का प्रयास करें। वैज्ञानिक संस्थानों की गतिविधियों को चलाने के लिए जहाँ प्रशासन, भंडार-क्रय तथा वित्त एवं लेखा जैसे विभाग अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं, वहीं उनके द्वारा किए जानेवाला हिंदी का काम संस्थान की समग्र छवि का एक चौथाई अंश हो सकता है, परंतु इस से अधिक महत्वपूर्ण है उस संस्थान, प्रतिष्ठान अथवा कार्यालय की व्युत्पत्ति से जुडे हुए अधिकाधिक विषयों को हिंदी एवं भारतीय भाषाओं के माध्यम से अधिसंख्य मानव समुदाय तक पहुँचाना ।

राजभाषा का तकनीकी क्षेत्र में योगदान

सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में पिछले कुछ दशकों से शीघ्र गति से विकास हुआ है । यह मनुष्य को सोचने विचारने और संप्रेषण करने के लिए तकनीकी सहायता उपलब्ध कराती है । सूचना प्रौद्योगिकी के अंतर्गत कंप्यूटर के साथ-साथ माइक्रोइलेक्ट्रोनिक्स और संचार प्रौद्योगिकि के शामिल होने के कारण इसके विकास का नवीनतम रूप हमें इंटरनेट, मोबाइल, रेडियो, टेलीविजन, टेलीफोन, उपग्रह प्रसारण, कंप्यूटर के रूप में हमे दिखाई दे रहा है ।

आज सूचना प्रौद्योगिकी की विस्तृत भूमिका को देखते हुए विश्व स्तर पर हिंदी भौगोलिक सीमाओं को पार कर सूचना टेक्नोलॉजी के परिवर्तित परिदृश्य में विभिन्न जनसंचार माध्यमों तक पहुँच रही है । हिंदी के नए सॉफ्टवेयर हों या इंटरनेट, कंप्यूटर टेक्नोलॉजी अनेक चुनौतियों को स्वीकार कर अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर जन-माध्यमों में अपनी मानक भूमिका के लिए संघर्षरत है ।

राजभाषा विभाग सी-डैक, पुणे के माध्यम से कंप्यूटर पर हिंदी प्रयोग को सरल व कुशल बनाने के लिए विभिन्न सॉफ्टवेयरों द्वारा हिंदी भाषा को तकनीकी से जोड़ने का सफल प्रयास 'प्रगत संगणन विकास केन्द्र (सी-डैक), पुणे ने किया है । 'एप्लाइड आर्टिफिशियल इंटैलीजेंस ग्रुप, प्रगत संगणन विकास केंद्र, पुणे द्वारा निर्मित सॉफ्टवेयर में विभिन्न भारतीय भाषाओं के माध्यम से इंटरनेट पर हिंदी सीखने के लिए लीला सॉफ्टवेयर विकसित किया है । लीला सॉफ्टवेयर के माध्यम से हिंदी प्रबोध, प्रवीण और प्राज्ञ पाठयक्रम असमी, बांग्ला, अंग्रेज़ी, कन्नड़ मलयालम, मणिपुरी, मराठी, उड़िया तमिल, तेलुगू, पंजाबी, गुजराती, नेपाली और कश्मीरी के द्वारा इंटरनेट पर सीखे जा सकते हैं । हिंदी प्रबोध, प्रवीण एवं प्राज्ञ

पाठक्रम के प्रशिक्षण के मूल्यांकन हेतु ऑन लाइन परीक्षा प्रणाली का विकास भी किया जा रहा है । अब इंटरनेट के माध्यम से ही परीक्षा दी जा सकेगी । द्विभाषी- द्विआयामी अंग्रेज़ी-हिंदी उच्चारण सहित ई-महाशब्दकोश का विकास भी किया गया है। ई-महाशब्दकोश में हर शब्द का उच्चारण दिया गया है जो कि किसी और शब्दकोश में नहीं मिलता । हिंदी शब्द देकर भी उसका अंग्रेज़ी में अर्थ खोजना संभव हो पाया है । इस में प्रत्येक अंग्रेज़ी और हिंदी शब्द के प्रयोग भी दिए गए हैं ।

आज के दौर में इंटरनेट पर सभी तरह की महत्वपूर्ण जानकारियाँ व सूचनाएँ उपलब्ध हैं जैसे परीक्षाओं के परिणाम, समाचार, ई-मेल, विभिन्न प्रकार की पत्र-पत्रिकाएँ, साहित्य, अति महत्त्वपूर्ण जानकारी युक्त डिजिटल पुस्तकालय आदि । परन्तु ये प्राय: सभी अंग्रेज़ी भाषा में हैं । अत: आज ये जरुरी है कि ये जानकारियां भी हिंदी में उपलब्ध कराई जाये । कम्प्यूटर पर भाषाओं के बीच एक पुल बनाने के लिए 'मंत्र' प्रोजेक्ट के तहत एक हिंदी सॉफ़्टवेयर के विकास के सहयोग से ये कुछ हद तक मुमकिन होता दिख रहा है । आने वाली शताब्दी अंतर्राष्ट्रीय संस्कृति की शताब्दी होगी और सम्प्रेषण के नए-नए माध्यमों व आविष्कारों से वैश्वीकरण के नित्य नए क्षितिज उद्घाटित होंगे । इस सारी प्रक्रिया में अनुवाद की महती भूमिका होगी । इससे "वसुधैव कुटुम्बकम्" की उपनिषदीय अवधारणा साकार होगी । इस दृष्टि से सम्प्रेषण-व्यापार के उन्नायक के रूप में अनुवादक एवं अनुवाद की भूमिका निर्विवाद रूप से अति महत्त्वपूर्ण सिद्ध होती है ।

निष्कर्ष

हिन्दी का प्रयोजनमूलक रूप अधिक शक्तिशाली तथा गत्यात्मक है। हिन्दी का प्रयोजनमूलक रूप न केवल उसके विकास में सहयोग देगा, बल्कि उसको जीवित रखने एवं लोकप्रिय बनाने में भी महत्वपूर्ण योगदान देगा। इस प्रकार विभिन्न प्रयोजनों के लिए गठित समाज खंडों द्वारा किसी भाषा के ये विभिन्न रूप या परिवर्तन ही उस भाषा के प्रयोजनमूलक रूप हैं। अंग्रेजी शासन में यूरोपीय संपर्क से हमारा सामाजिक, आर्थिक और प्रशासनिक ढांचा काफी बदला, धीरे-धीरे हमारे जीवन में नई उद्भावनाएं (जैसे पत्रकारिता, इंजीनियरिंग, बैंकीय) पनपी और तदनुकूल हिन्दी के नए प्रयोजनमूलक भाषिक रूप भी उभरे।

स्वतंत्रता के बाद तो हिन्दी भाषा का प्रयोग क्षेत्र बहुत बढ़ा है और तदनुरूप उसके प्रयोजनमूलक रूप भी बढे हैं और बढ़ते जा रहे हैं। साहित्यिक विधाओं, संगीत, कपड़ा-बाजार, सट्टाबाजारों, चिकित्सा, व्यवसाय, खेतों, खलिहानों, विभिन्न शिल्पों और कलाओं, कला व खेलों के अखाड़ों, कोर्टो कचहरियों आदि में प्रयुक्त हिन्दी पूर्णत: एक नहीं है। रूप-रचना, वाक्य रचना, मुहावरों आदि की दृष्टि से उनमें कभी थोड़ा कभी अधिक अंतर स्पष्ट है और ये सभी हिन्दी के प्रयोजनमूलक परिवर्त या उपरूप है।

संदर्भ ग्रंथ

[1] हिन्दी - उद्‌भ विकास और स्वरूप; अष्टम संस्करण, १९८४, पृष्ठ-१५.

[2] भाषा विज्ञान कोश, डा. भोलानाथ तिवारी, ज्ञानमंडल लिमिटेड, वाराणसी, संस्करण-1963ई०, पृ०-421।

[3] भाषा विज्ञान कोश, डा. भोलानाथ तिवारी, पूर्ववत्, पृ०-422।

[4] भाषा विज्ञान कोश, डा. भोलानाथ तिवारी, पूर्ववत्, पृ०-704।

[5] "संग्रहीत प्रति". मूल से 4 जनवरी 2018 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 21 दिसंबर 2017।

[6] हिंदी साहित्य का बृहत् इतिहास, तृतीय भाग, संपादक- पं० करुणापति त्रिपाठी एवं डॉ० वासुदेव सिंह, नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी, संस्करण-1983, पृष्ठ-320।

[7] हिन्दी साहित्य का वैज्ञानिक इतिहास, प्रथम खण्ड, डॉ० गणपतिचन्द्र गुप्त, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, संस्करण-2001, पृ०-67-70।